SUPERDRY
CR
खतना
जरूरी या मजबूरी

पुस्तक सारणी

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब अंग 477, लेखक संत कबीर के खतना पर विचार

ਸਕਤਿ ਸਨੇਹੁ ਕਰਿ ਸੁੰਨਤਿ ਕਰੀਐ ਮੈ ਨ ਬਦਉਗਾ ਭਾਈ ॥

Sakath Sanaehu Kar Sunnath Kareeai Mai N Badhougaa Bhaaee ||

Because of the love of woman, circumcision is done; I don't believe in it, O Siblings of Destiny.

ਆਸਾ (ਭ. ਕਬੀਰ) (੮) ੨:੧ - ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ : ਅੰਗ ੪੭੭ ਪੰ. ੧੬

Raag Asa Bhagat Kabir

ਜਉ ਰੇ ਖੁਦਾਇ ਮੋਹਿ ਤੁਰਕੁ ਕਰੈਗਾ ਆਪਨ ਹੀ ਕਟਿ ਜਾਈ ॥੨॥

Jo Rae Khudhaae Mohi Thurak Karaigaa Aapan Hee Katt Jaaee ||2||

If God wished me to be a Muslim, it would be cut off by itself. ||2||

ਆਸਾ (ਭ. ਕਬੀਰ) (੮) ੨:੨ - ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ : ਅੰਗ ੪੭੭ ਪੰ. ੧੭

Raag Asa Bhagat Kabir

ਸੁੰਨਤਿ ਕੀਏ ਤੁਰਕੁ ਜੇ ਹੋਇਗਾ ਅਉਰਤ ਕਾ ਕਿਆ ਕਰੀਐ ॥

Sunnath Keeeae Thurak Jae Hoeigaa Aourath Kaa Kiaa Kareeai ||

If circumcision makes one a Muslim, then what about a woman?

ਆਸਾ (ਭ. ਕਬੀਰ) (੮) ੩:੧ - ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ : ਅੰਗ ੪੭੭ ਪੰ. ੧੭

Raag Asa Bhagat Kabir

ਅਰਧ ਸਰੀਰੀ ਨਾਰਿ ਨ ਛੋਡੈ ਤਾ ਤੇ ਹਿੰਦੂ ਹੀ ਰਹੀਐ ॥੩॥

Aradhh Sareeree Naar N Shhoddai Thaa Thae Hindhoo Hee Reheeai ||3||

She is the other half of a man's body, and she does not leave him, so he remains a Hindu. ||3||

ਆਸਾ (ਭ. ਕਬੀਰ) (੮) ੩:੨ - ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ : ਅੰਗ ੪੭੭ ਪੰ. ੧੮

Raag Asa Bhagat Kabir

ਛਾਡਿ ਕਤੇਬ ਰਾਮੁ ਭਜੁ ਬਉਰੇ ਜੁਲਮ ਕਰਤ ਹੈ ਭਾਰੀ ॥

Shhaadd Kathaeb Raam Bhaj Bourae Julam Karath Hai Bhaaree ||

Give up your holy books, and remember the Lord, you fool, and stop oppressing others so badly.

ਆਸਾ (ਭ. ਕਬੀਰ) (੮) ੪:੧ - ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ : ਅੰਗ ੪੭੭ ਪੰ. ੧੮

Raag Asa Bhagat Kabir

ਕਬੀਰੈ ਪਕਰੀ ਟੇਕ ਰਾਮ ਕੀ ਤੁਰਕ ਰਹੇ ਪਚਿਹਾਰੀ ॥੪॥੮॥

Kabeerai Pakaree Ttaek Raam Kee Thurak Rehae Pachihaaree ||4||8||

Kabeer has grasped hold of the Lord's Support, and the Muslims have utterly failed. ||4||8||

ਆਸਾ (ਭ. ਕਬੀਰ) (੮) ੪:੨ - ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ : ਅੰਗ ੪੭੭ ਪੰ. ੧੯

भूमिका

अगर आप बच्चे या 18 से नीचे की उम्र के है तो बिना अभिभावकों की समझ के इस पुस्तक न पढ़े।

यह पुस्तक एक बहु चर्चित narrative या प्रोपगंडा का भंडाफोड़ करने के लिए लिखी जा रही है, जो कि खतना रिवाज को लेकर फैलाया जाता रहा है।

आमतौर पर खतना रिवाज को scientific और healthy कहकर abrahamic कल्ट के लोगो द्वारा फैलाया जाता है और दूसरे लोगो को भी इसे करवाने की सलाह दी जाती है।
इसके ऊपर बहुत से उटपटांग तर्क और फर्जी report बताई जाती है। हम उन सभी के ऊपर चर्चा करके उन सभी के आधार पर बताएंगे कि कैसे खतने के सभी फायदे महज एक बोगस केस के अलावा और कुछ नही है। Female genital mutilation पर तो अब ban लगाने की मांग तक उठने लगी है और 6 फरवरी को Zero tolerance day for FGM मनाने लगे है, लेकिन इस दौर में भी गैर मजहब लोगो को लुभाने के लिए सस्ती magazine, Blogs और वेबसाइट के जरिये बरगलाने वाले नकली तथ्यो की भरमार है।

हम इन्ही पॉइंट्स को आपको असली तथ्थ प्रमाणों सहित पेश करेंगे ताकि आप जान सके कि खतना एक रिवाज के अलावा और कुछ नही और इसकी कोई खास जरूरत भी नही है।

लेखक - मूक योद्धा

भाग 1

खतना का इतिहास

खतना पहले तो जान लिया जाए कि क्या होता है?

पुरुष प्रजनन या सम्भोग अंग जिसे संस्कृत में शिश्न कहते है और हिंदी भाषा मे लन कहते है, अंग्रेजी में इसे penis कहते है।
इस अंग में कुछ भाग होते है जिसमे से हमारी दो हिस्सो पर बात होगी। एक जो कि शिश्नमुंड (penis के आगे का गोल हिस्सा जिसमे मूत्र का छेद होता है) है और दूसरा चमड़ी जो कि शिश्नमुंड के इर्द गिर्द होता है।
खतना रिवाज इसी चमड़ी वाले हिस्से को शल्य चिकित्सा(surgery) द्वारा अलग करना ही होता है, जिसके बाद पुरुष अंग में सिर्फ शिश्नमुंड रह जाता है।
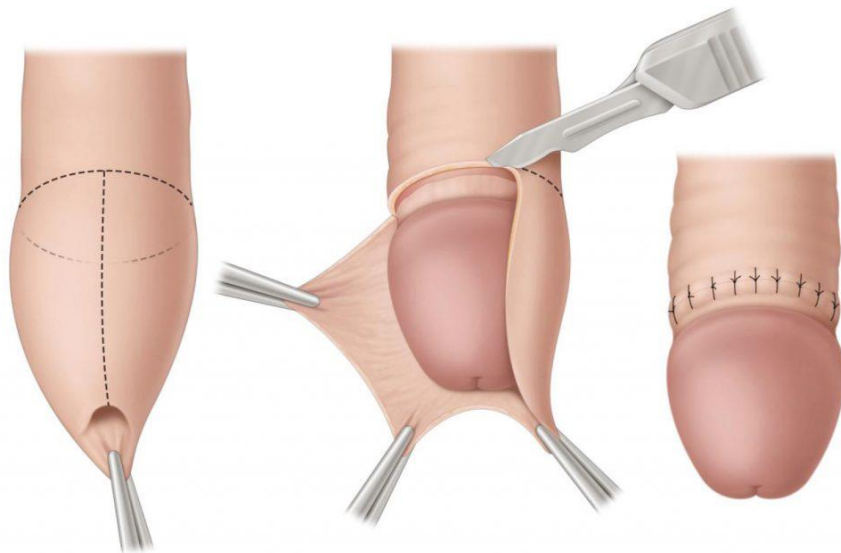
आज के 21वी सदी के दौर में यह रिवाज यहूदी मजहब और इस्लाम मजहब के अंदर मिलता है। किसी समय मे ईसाई या नासरिनि भी इसे मानते थे लेकिन अब उनके ज्यादातर फिरके इस रिवाज को छोड़ चुके है।

अब वह इस रिवाज को अगर करते भी है तो मजहब के रिवाज की तरह नही बल्कि डॉक्टरी कारण से करते है।

इसी प्रकार कुछ मुस्लिम फिरको में औरतों के भी खतना का रिवाज है, जिसे अंग्रेजी में Female Genital mutilation कहते है। FGM का जिक्र सिर्फ इस्लामी मजहब में मिलता है बाकी मजहब में इसका कोई जिक्र नही, न ही वह इसका पालन कर रहे है। इस समय यह रिवाज अफ्रीकी मूल के उन इलाकों में किया जाता है जहां पर इस्लामी राज्य है।

इस रिवाज में महिलाओं के प्रजनन अंग जिसे संस्कृत में भग, योनि और अंग्रेजी में vagina कहते है उसके भागो में काट छंट करके वहां से मांस के टुकड़े हटा लिए जाते है। इसे इस्लाम मजहब में हराम की बोटी काटना कहा जाता है।

इस प्रकार की शल्य क्रिया के 3 प्रकार होते है जिन्हें विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 2008 की लिस्ट में क्रमबद्ध किया है:-

1. प्रकार 1- इस प्रकार में शल्य क्रिया के जरिये भगनासा (Clitoris) के हिस्से को काटकर अलग कर दिया जाता है। clitoris एक दाने जैसे अंग होता है जो vagina के ऊपरी भाग में होता है और महिलाओं में काम अग्नि को बढ़ाता है।
2. प्रकार 2- इस प्रकार में भगनासा(Clitoris) और Labia minor को काट कर अलग कर दिया जाता है।
3. प्रकार 3- इस मे भगनासा, labia minor को काट कर अलग कर देते है और Labia major के हिस्सों को सुई धागे की मदद से सिल देते है, या किसी और तरीके (पेड़ पौधों के कांटो) से बंद कर देते है सिर्फ एक छोटे से छेद को छोड़ कर जिसके कारण युवती मूत्र कर सके या बाद में प्रजनन कर सके। इस दौर में लड़की की टांगो को भी बांधा जाता है ताकि उसके टांके आराम से भर सके। बाद में जब पुरुष ऐसी

स्त्री से समागम करता है तो पहली बार यह छेद खुलता है, जिसमे स्त्री पीड़ा का अनुभव करती है।

हम FGM पर आगे के एक भाग में विस्तृत चर्चा करेंगे।

अगर हम खतना का इतिहास देखे तो अकेला मुस्लिम मजहब से तालुक रखने वाला रिवाज नही है, बल्कि यह उससे भी पुराना आदिम काल का रिवाज है।

आदिम काल युग मे जब मानव अपने शुरआती दौर में था, तब हर जगह मानव एक जंगली पन में रत रहता था। ऐसे में पुरुष शत्रु को पकड़कर उसका मान मर्दन करने के लिए उसका अंग आधा या पूरा काट देने का रिवाज था। इससे कटे हुए अंग वाला पुरुष सदैव एक दास बोध में दबे रहने का आभास रखता था और यह पकड़े हुए दास पर जीत की निशानी का सबूत था, वही कुछ कबीलों में यह रिवाज मर्दानगी दिखाने के लिए भी किया जाता था। इन कबीलों के लड़के शिश्न के आगे के हिस्से को काटकर अपने मर्द होने को साबित करते थे।

इस प्रकार से यह रिवाज धीरे धीरे अफ्रीका के उस भू भाग में फैला जहां पर बहुत समय पहले मिस्र (Egypt) होता था। मिस्री (Egyptian) लोग अपने यहां लोगो का खतना करते थे।हालांकि किसी भी जांच से यह ठीक ढंग से नही समझ आया कि इसके पीछे का मिस्री कारण क्या था, लेकिन इसका कारण उनके धार्मिक रिवाज ही था क्यूंनकि मिस्री लोगो के सूर्य देवता रा Ra ने भी शिशनछेदन किया था, ऐसा मिथक है।

इसके बाद यह रिवाज यहूदी मजहब में भी पाया जाता है जिसके लिए वह अब्राहम को इसके पीछे जोड़ते है। यहूदी मत के लोगो का मानना है कि

अब्राहम और उसके लोगो और यहां तक कि उसके दासों ने भी खतना करवाया था।
हालांकि कई इतिहासकार आज तक इब्राहिम और अन्य यहूदी पितामहों (jacob और moses) के असली होने तक मे संदेह करते है क्यूंनकि इनके होने का कोई भी सबूत आज तक नही मिला है सिवाय मौखिक बातों के। इस सूरत में यह मानने में कोई शक नहीं है की खतना का रिवाज एक आदिमकाल का रिवाज है जो की पहले से यहूदी लोगो के पूर्वज कराते थे और जो बाद में यहूदी और बाकि मजहब का हिस्सा बन गया।

वही दूसरी तरफ तर्क और मनन करने वाले यूनानी और रोमन संस्कृति के लोगो ने हमेशा ही खतना को एक बुरी नजर से देखा और इसे बर्बर और बेकार माना था।
यूनानी राजा एंटीऑक ऐपिफन्स(Antioch epiphanes)और रोमन राजा हैडरियान(hadrian) ने तो खतना को प्रतिबंधित कर दिया था। इस चलते कई यहूदी लोगो ने बस चमड़ी का बहुत छोटा हिस्सा काटना जारी रखा और सार्वजनिक रूप में यही बताया कि वह खतना प्रथा को नही मानते है। इस तरह वह अपने इस रिवाज को गुप्त रखने लगे।

पहले यह रिवाज ईसाई मजहब में भी था लेकिन ईसाइयो ने इसे ईसा के प्रमुख संदेशों से भिन्न माना और इसका अनुसरण नही किया और धीरे धीरे इसे बंद कर दिया है। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि ईसाइयो के खतना न करने का कारण यह था कि रोमन और यूनानी साम्राज्य खतने को हेय और गलत दृष्टि से देखते थे, बल्कि कई सम्राटों ने इसे करवाना तक प्रतिबंधित कर दिया था, जिसके बाद से यहूदी इस रिवाज को चोरी छुपे कराते थे और बाद में यहूदी मजहब से निकले ईसाईयो ने जब रोम पर शासन शुरू किया तो उन्होंने भी रोमन साम्राज्य की तर्ज पर खतना अपने नए मजहब से बाहर कर दिया।

इस प्रकार से आप खतने का इतिहास पढ़कर जान सकते है कि हर मजहब ने खतने को एक चले चलाये रिवाज के तौर पर ही अपनाया और आगे बढ़ाया लेकिन कभी भी इसके फायदों पर कोई भी तुलनात्मक टिप्पणी या विचार नही किया।
उल्टे हर जगह यहूदी लोगो के रिवाज के उलट चलने वाले मुस्लिम जो कि यहूदी लोगो के रिवाजो के उलट काम करते दिखते है, जिनकी किताबो में यहूदी लोगो से भर भर कर नफरत की गयी है, वो भी इस रिवाज को जो कि उनसे पहले यहूदी पैगम्बर करते थे उसी को आंख मूंद कर अपनाएं हुए है।
काफी जगह पर अब मुस्लिम तर्क (तनक़ीद) करेंगे कि इब्राहिम यहूदी नही मुस्लिम थे। जबकि सच्ची बात तो यह है कि इस्लाम के आने से भी पहले इब्राहिम को यहूदी मजहब के लोग अपना पैग़म्बर समझते और मानते है तो भला वो मुस्लिम कैसे हो गए???

कई मौलवी आपको पुरानी यहूदी किताबो में एक दो जगह मुस्लिम शब्द दिखाते है और कहते है कि देखो इन किताबो में मुस्लिम शब्द हिब्रू भाषा मे लिखा है जिसके मायने है कि इस्लाम यहूदियो से पहले थे, यह भी एक निहायती झूठी बात है।
असल मे हिब्रू भाषा और अरबी भाषा एक ही भाषा सेमिटिक की बेटियां कही जा सकती है इसीलिए दोनों में ही एक शब्द मिलता है मुस्लिम, जिसका शाब्दिक मतलब होता है पक्का श्रद्धा वाला। लेकिन मुस्लिम शब्द का अर्थ इधर इस्लाम मजहब का अनुयायी नही बल्कि यहूदी मजहब का पक्का श्रध्दा वाला होता है। इस शब्द का इस्लाम मजहब से मतलब जोड़ना एक साजिश और गलती के अलावा कुछ नही होगा।

भाग 2

खतना का इस्लामी किताबो में जिक्र

आम तौर पर जब मोमिनों से यह पूछा जाता है कि यह रिवाज मुस्लिमो में कैसे आया है तो वह आपको एक ही प्रकार का रटा रटाया जवाब देते है की यह सुन्नत ए रसूल (रसूल का तरीका) है, यानी हजरत मुहम्मद जी ने करवाया था इसीलिए हम भी करवाते है।
हालांकि इसके ऊपर भी अलग अलग फिरको में अलग अलग बयान दिए जाते है।
कभी कभी वह यह कहते है कि यह तो हजरत इब्राहीम जो कि अब्राहिमिक मजहब के संस्थापक माने जाते है, उन्होंने भी 80 साल की उम्र में खतना करवाया था। इसके लिए वह एक हदीस का हवाला देते है।

अल अदब अल मुफ़्राद किताब **1** हदीस **1244**
अबु हुरैरा फरमाते है कि अल्लाह के नबी(सल्लाहु अल्हेहि वस्सलम) ने कहा था कि हजरत इब्राहिम अल्लाह उन्हें सुकून दे, ने अपना खतना 80 साल की उम्र में अपने हाथों से एक कुल्हाड़ी (कदम) की मदद से किया था।

Abu Hurayra reported that the Messenger of Allah, may Allah bless him and grant him peace, said, "Ibrahim, may Allah bless him and grant him peace, was circumcised when he was eighty years old. He was circumcised with an axe (qadum)."

أَخْبرَنَا شُعَيْبُ بْنُ أَبِي حَمْزَةَ، قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صلى الله عليه وسلم قَالَ: اخْتَتَنَ إِبْرَاهِيمُ صلى الله عليه وسلم بَعْدَ ثَمَانِينَ سَنَةً، وَاخْتَتَنَ بِالْقَدُومِ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللَّهِ: يَعْنِي مَوْضِعًا.

Grade: **Sahih** (Al-Albani) حكم : صحيح (الألباني)

Sunnah.com reference : Book 1, Hadith 1
English translation : Book 53, Hadith 1244
Arabic reference : Book 1, Hadith 1244

(हालांकि सवाल यह उठता है कि किसी भी यहूदी किताब में इस घटना का कोई जिक्र क्यों नही मिलता है, उल्टे यहुदी किताब के genesis भाग 17:24 में बताया है कि अब्राहम जब 90 साल के थे तो उनका खतना हुआ था, न कि 80 की उम्र में कुल्हाड़ी से???? नीचे की फ़ोटो देखिए सबूत के तौर पर)

Abraham.

23 And Abraham took Ishmael his son and all those born in his house and all those purchased with his money, every male of the people of Abraham's household, and he circumcised the flesh of their foreskin on that very day, as God had spoken with him.

כג וַיִּקַּח אַבְרָהָם אֶת־יִשְׁמָעֵאל בְּנוֹ וְאֵת כָּל־יְלִידֵי בֵיתוֹ וְאֵת כָּל־מִקְנַת כַּסְפּוֹ כָּל־זָכָר בְּאַנְשֵׁי בֵּית אַבְרָהָם וַיָּמָל אֶת־בְּשַׂר עָרְלָתָם בְּעֶצֶם הַיּוֹם הַזֶּה כַּאֲשֶׁר דִּבֶּר אִתּוֹ אֱלֹהִים:

24 And Abraham was ninety-nine years old, when he was circumcised of the flesh of his foreskin.

כד וְאַבְרָהָם בֶּן־תִּשְׁעִים וָתֵשַׁע שָׁנָה בְּהִמֹּלוֹ בְּשַׂר עָרְלָתוֹ:

25 And Ishmael his son was thirteen years old, when he was circumcised of the flesh of his foreskin.

כה וְיִשְׁמָעֵאל בְּנוֹ בֶּן־שְׁלֹשׁ עֶשְׂרֵה שָׁנָה בְּהִמֹּלוֹ אֵת בְּשַׂר עָרְלָתוֹ:

26 On that very day, Abraham was circumcised, and [so was] Ishmael his son.

כו בְּעֶצֶם הַיּוֹם הַזֶּה נִמּוֹל אַבְרָהָם וְיִשְׁמָעֵאל בְּנוֹ:

27 And all the people of his household, those born in his house and those bought with money from foreigners, were circumcised with him.

כז וְכָל־אַנְשֵׁי בֵיתוֹ יְלִיד בָּיִת וּמִקְנַת־כֶּסֶף מֵאֵת בן־נכר נמֹלוּ אתוֹ:

दूसरी और अगर हम देखे तो पूरी कुरान मजीद में एक सुराह तो छोड़िए, एक हर्फ (शब्द) तक नही है, जिसमे खतना का जिक्र हो या इसकी कोई खूबी हो। कुरान की पूरी किताब में से कही पर भी इस रिवाज की जरूरत का जिक्र नही लेकिन मुस्लिम कभी नही कहते कि खतना करवाना जरूरी नही है??
इसी तरह ज्यादातर हदीस की किताबो में भी खतने का कोई जिक्र नही है, सिवाय के एक दो किताबो के जैसे कि अल अदब अल मुफ़्राद। बाकी सभी हदीस की किताबो में शाहदा (अल्लाह और रसूल में ईमान की गवाही) ही काफी माना गया है।

बहुत से मुस्लिम एक दलील देकर ज्यादातर अपना पल्ला झाड़ लेते है कि खतना करवाना फर्ज नही है बल्कि मर्जी की बात है। खतना को लेकर मुस्लिम यही कहते मिलेंगे की खतना किसी के साथ जबरदस्ती नही किया जाता है।

हालांकि यह बात कोरी दिलासे के अलावा और कुछ नही है क्योंकी इस्लामी किताबे खासकर हदीस कुछ अलग ही बाते बता रही है।

हदीस की एक किताब अल अदब अल मुफ़्राद के अनुसार जब भी एक आदमी(गैर मजहब) इस्लामी हो जाये तो उसे फौरन खतना करवा लेना चाहिए चाहे वह बूढ़ा ही क्यों न हो!!
नीचे दिए गए image को देखिए।

Ibn Shihab said, "When a man became Muslim, he was ordered to have himself circumcised, even if he was old."

حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأُوَيْسِيُّ قَالَ: حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: وَكَانَ الرَّجُلُ إِذَا أَسْلَمَ أُمِرَ بِالِاخْتِتَانِ وَإِنْ كَانَ كَبِيرًا.

حكم : صحيح الإسناد موقوفا أومقطوعا (الألباني)

Sunnah.com reference : Book 1, Hadith 9
English translation : Book 53, Hadith 1252
Arabic reference : Book 1, Hadith 1252

Report Error | Share | Copy ▼

इसके अलावा दारूम उलूम देवबंद का निकाला हुआ एक फतवा भी देखिए जिसमे साफ तौर पर खतना को एक सुन्नत बताया गया है और यह भी कहा गया है कि इसे न करवाना सुन्नह न मानने का पाप होगा और ऐसा किसी बहुत खास कारण से ही नही होता है। इस फतवे में कही पर भी मर्जी से खतना न करवाने का कोई भी जिक्र नही है।

Khatna (cutting of extra skin of penis) is how much important in Islam?

Answered according to Hanafi Fiqh by Darulifta-Deoband.com

Short Link: https://islamqa.org/?p=24279

← Prev Question Next Question →

As salamualikum janab mufti sab.khatna (cutting of extra skin of penis)is how mach important in Islam.if any one is not done it is he a perfect Muslim.

Answer

(Fatwa: 557/557=M/1430)

Circumcision (khatnah) is a matter approved by sound reasoning; it is emphasized sunnah and a symbol of Islam. If someone forsakes it without valid reason he will get the sin of forsaking sunnah.

Allah (Subhana Wa Ta'ala) knows Best

Darul Ifta,
Darul Uloom Deoband

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि कैसे इस्लाम मे कुरान और हदीसो में खतना फर्ज स्पष्ट न होने के बावजूद भी किसकी वजह से जरूरी है?? यह बात भी जग जाहिर है कि मुस्लिम अपने नए पैदा हुए बच्चो का खतना करवाने को कितने बैचैन रहते है, जिसके पीछे मुल्ला मौलवियों और अशराफ मुस्लिमो का हाथ है।

आप इस विश्व नक़्शे में साफ देख सकेंगे कि खतना करवाने का हिसाब क्या चल रहा है। इनमें इस्लामी देशों में यह रिवाज 98.9 एवरेज से सभी जगह पर दिखता है। पर जिधर भी दूसरे मजहब वाले भी रहते है जैसे कि हिंदुस्तान वहां पर सिर्फ 18 परसेंट आंकड़ा है।
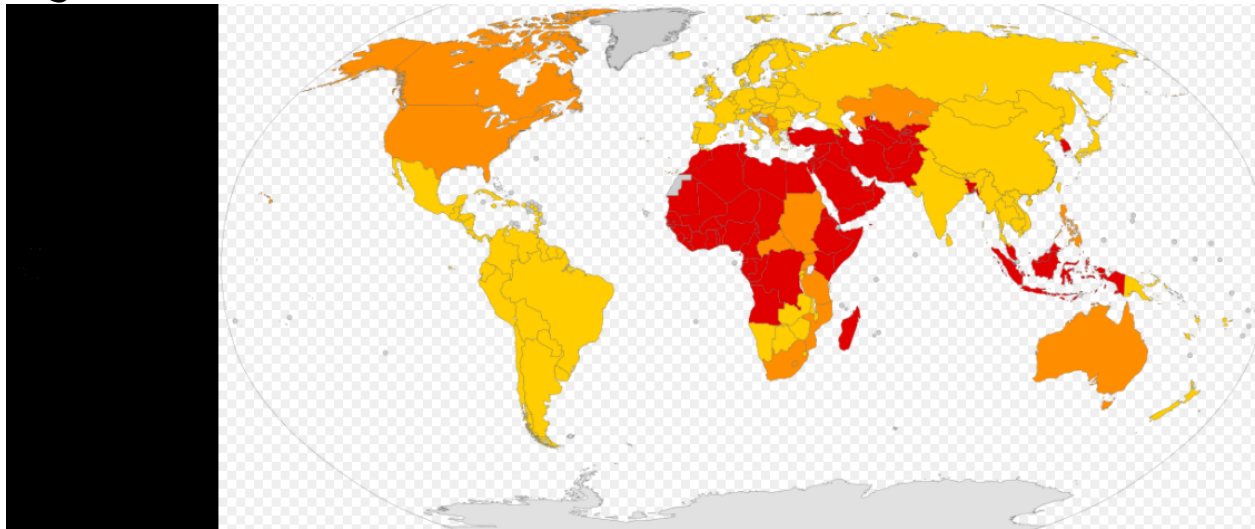
Rate of male circumcision by country in 2007[9] >80% 20–80% <20% N/A

इस्लाम मजहब में आंकड़े साफ साफ दिखाते है की मुस्लिम आबादी में 98.9 परसेंट आबादी एवरेज के हिसाब से सभी खतना युक्त होते है, यानी कि सभी के सभी मुस्लिम पुरुषों का खतना जरूर हुआ होता है।

खतना कराने की उम्र जो कि पैदा होने से लेकर 15 साल तक तय रहती है, उसमें भी 7 साल का होने से पहले ही खतना कराने का एक peer pressure मुस्लिमों पर देखा गया है। कई मुस्लिम लोग गाजे बाजे और

धूमधाम से इस रिवाज को अंजाम देते है जिसका विरोध खुद इस्लाम मजहब के मौलवी करते दिख जाते है, हालांकि उन्हें खतने से नही बल्कि उसपर होने वाले फिजूल खर्चे से दिक्कत होती है।

तो सवाल यह है कि अगर यह जरूरी रिवाज नही होता है, जैसा दावा चंद मौलवी करते है तो भला मुस्लिमो में यह peer pressure क्यों बना रहता है कि उनके बच्चो का खतना किया जाए!! क्यों यह आंकड़े कम होने के बजाए 100 प्रतिशत के नजदीक है??? इससे साफ जाहिर होता है कि खतना इस्लाम का एक बहुत जरूरी अंग है चाहे की कोई एक दो लोग इसके लिए दलील पेश करते रहे।

भाग 3

खतना और गैर मुस्लिम

अब हम आपको उस दावे पर ले जाते है जिस पर मुस्लिम यह कहते है कि खतना कभी भी नए बने मुस्लिमो या जो पहले गैर मुस्लिम थे उनके लिए जबर्दस्ती से नही किया जाता है। इस दावे में मुस्लिम बहुत जोर देकर कहते है कि यह रिवाज इस्लाम की जरूरत नही है और किसी को मुसलमान बनने के लिए सिर्फ शाहदा देना ही काफी है। लेकिन हम पिछले भाग में पढ़ चुके है कि इस्लाम मे खतने की अहमियत कम नही है बल्कि इसे एक बहुत ही जरूरी हिस्सा माना जा रहा है चाहे वह सावर्जनिक तौर पर न कहा जाए। यह बिल्कुल यहूदियो के रोमन यूनानी राज के दौर की बात की तरह है।

एक हदीस का रेफरेन्स देखिए, जो कि अल अदब अल मुफ़्राद से ली गयी है।

एक बूढ़ी औरत अली इब्न घुराब की दादी ,जो कि कूफ़ा से थी, उसने बताया कि उम्म अल मुहाजिर ने उसे बताया, "मैं बाइज़ैन्टियम से कुछ लड़कियों के साथ पकड़ी गई थी, उस्मान ने हमे इस्लाम की दावत दी, पर सिर्फ दो लड़कियों ने उसे कबूल किया। उस्मान ने कहा, "जाओ और इनका खतना करो और उसके बाद साफ करो इन्हें।"

An old woman from Kufa, the grandmother of 'Ali ibn Ghurab, reported that Umm al-Muhajir said, "I was captured with some girls from Byzantium. 'Uthman offered us Islam, but only myself and one other girl accepted Islam. 'Uthman said, 'Go and circumcise them and purify them.'"

حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، قَالَ: حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ قَالَ: حَدَّثَتْنَا عَجُوزٌ مِنْ أَهْلِ الْكُوفَةِ جَدَّةُ عَلِيِّ بْنِ غُرَابٍ قَالَتْ: حَدَّثَتْنِي أُمُّ الْمُهَاجِرِ قَالَتْ: سُبِيتُ فِي جَوَارِي مِنَ الرُّومِ، فَعَرَضَ عَلَيْنَا عُثْمَانُ الإِسْلاَمَ، فَلَمْ يُسْلِمْ مِنَّا غَيْرِي وَغَيْرُ أُخْرَى، فَقَالَ عُثْمَانُ: اذْهَبُوا فَاخْفِضُوهُمَا، وَطَهِّرُوهُمَا.

इस हदीस में खतना का इतिहास साफ झलकता है कि अगर कोई जंग में पकड़ा जाता था और इस्लामी लोग उसे इस्लाम की दावत देते थे, अगर वह उसे कबूल ले तो उसका खतना भी कर देते थे।

एक दूसरी हदीस में भी एक आदमी मालिक इब्न अल मुंधिर का जिक्र है जिसने कासकर के पुराने लोगो का निरीक्षण किया गया जिन्होंने बहुत पहले इस्लाम कबूला था और बाद में जब उसने पाया कि उनका खतना नही हुआ तो उसने उनका खतना करवाया जबकि वहां पर सर्दी का मौसम था। इससे कुछ लोग मर भी गये थे।

It is reported that al-Hasan said, "Are you not astonished by this man? (i.e. Malik ibn al-Mundhir) He went to some of the old people of Kaskar who had become Muslim and examined them and then commanded that they be circumcised although it was winter. I heard that some of them died. Greeks and Abyssinians became Muslim with the Messenger of Allah, may Allah bless him and grant him peace, and they were not examined at all."

حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ: أَخْبَرَنَا مُعْتَمِرٌ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ أَبِي الذَّيَّالِ، وَكَانَ صَاحِبَ حَدِيثٍ، قَالَ: سَمِعْتُ الْحَسَنَ يَقُولُ: أَمَا تَعْجَبُونَ لِهَذَا؟ يَعْنِي: مَالِكَ بْنَ الْمُنْذِرِ عَمَدَ إِلَى شُيُوخٍ مِنْ أَهْلِ كَسْكَرَ أَسْلَمُوا، فَفَتَّشَهُمْ فَأَمَرَ بِهِمْ فَخُتِنُوا، وَهَذَا الشِّتَاءُ، فَبَلَغَنِي أَنَّ بَعْضَهُمْ مَاتَ، وَلَقَدْ أَسْلَمَ مَعَ رَسُولِ اللهِ صلى الله عليه وسلم الرُّومِيُّ وَالْحَبَشِيُّ فَمَا فُتِّشُوا عَنْ شَيْءٍ.

इन दोनों हदीसो से साबित होता है कि मुस्लिमो में गैर मुस्लिम का खतना करना भी कोई गलत नही है अगर वह गैर मुस्लिम एक बार इस्लाम कबूल कर ले। इसके बाद जोर जबर्दस्ती या चिकनी चुपड़ी बातों से बहला कर उस का खतना कर दिया जाता था।

इतिहास की किताबें उन सभी किस्सों और तथ्यो से भरी पड़ी है जिनसे यह दावा भी खोकला साबित होता है कि इस्लाम मे नए कनवर्टेड मेम्बर का खतना करना जरूरी नही होता है, बल्कि जिन लोगो को इस्लामी

आततायी लोगो ने जबरदस्ती पकड़ कर खतना करवाया है या डरा धमका कर करवाया है उनके भी किस्से कम नही है।

भारत मे पुराने समय से ही मुस्लिम आक्रांताओं ने जब जब भारत पर हमला किया तो उन्होंने बेकसूर हिन्दुओ के मंदिर तोड़े, उनकी औरतों बच्चो को गुलाम बना कर बेचा। जिन जिन ने डर और जजिया के अभाव के मारे इस्लाम कबूला उन लोगो का जबरदस्ती खतना किया गया और बाकी हिन्दुओ ने जजिया देकर अपने धर्म की रक्षा की। बाकी बहुत से हिंन्दुओ ने भी इन आक्रांताओं से युद्ध लड़कर सनातन धर्म की रक्षा की जिससे इस्लामी जिहाद कभी भी पूरी तरह से भारत पर छा न सका।

तारीख (इतिहास) की किताबो में अगर आप देखे की टीपू सुल्तान ने जब 1780 की जंग में जबरदस्ती पकड़े गए लोगो का खतना करवाया था। और 1947 के दंगों में भी कई लोगो के साथ यह जबरदस्ती करवाया गया था।
आज के दौर में भी कई newsl में मुस्लिमो द्वारा कई मजबूर गैर मुस्लिमो को पकड़ कर उनके खतने की कई खबरे आ जाती है।
असम के हैलाकांदी में हाल ही में २ अज्ञात लोगो ने एक बच्चे का जबरदस्ती खतना कर दिए था।

हरयाणा के नुहु इलाके में भी 2020 में एक ऐसी ही घटना में एक युवक का जबरदस्ती खतना करके इस्लामी बना दिया गया था। [1]

[1] https://www.specialcoveragenews.in/rajasthan/jaipur/forced-conversions-in-haryana-1142258

अलवर (राजस्थान): हरियाणा में जबरन धर्म परिवर्तन कराने का एक मामला सामने आया है। पीड़ित अलवर जिले के बड़ौदा क्षेत्र के गांव बड़ौदमेव का मूल निवासी है। पीड़ित युवक की फरियाद पर मंगलवार को SC-ST कोर्ट ने पुलिस को FIR दर्ज करने के आदेश भी दिए हैं। पीड़ित ने मामले में कोर्ट के सामने अपील की थी।

पीड़ित ने कोर्ट में बताया कि हरियाणा के नुहू जिले के फिरोजपुर झिरका तहसील के इब्राहिम की बास में रिश्तेदारी थी, वहां के मेव लोगों से उसकी मित्रता हो गई, जिसके बाद इब्राहिम को बास निवासी सत्तार तैयब शहजाद रत्ती, महबूब और अन्य ने उसे वहां बुलाया तथा हिंदू धर्म छोड़कर मुस्लिम धर्म अपना लेने के लिए जबरन बंधक बना लिया।

29 जनवरी 2018 को पीड़ित का जबरन धर्म परिवर्तन कराकर उसका नाम मोहम्मद अनस रख दिया गया। इसका घोषणा पत्र भी लिखा गया था। पुलिस ने बताया है कि आरोपी पीड़ित को जबरन जमात में ले गए और खतना करवाई। जम्मू-कश्मीर में मस्जिदों तक ले गए और धमकाया कि भागा या किसी को बताया तो परिवार को मार देंगे।

असल मे जबरदस्ती खतने के पीछे आज भी वही पुरानी मानसिकता काम कर रही है जो कि पुराने जमाने मे चलती थी जिसमे दुश्मन को पकड़कर उसका जबरन खतना कर दिया जाता था जिसके बाद वह शत्रु दास बोध में जीता था।
इस्लाम मे कई मौलवी (खासकर शाफी और हनबली मत) इस तरह का peer pressure बनाते है कि बिना खतना करवाये गैर मुस्लिम का शाहदा देना विश्वाश लायक नही है। इनके अनुसार खतना करवाना ही एकमात्र जरिया समझा जाता है जिससे एक गैर मुस्लिम मोमिन समझा जाता है। इसके अलावा मौलवी यह भी मानते है कि खतना ही एक पक्की निशानी है कि अगर बाद में यह गैर मुस्लिम अगर मुर्तद या ex muslim भी हो गया तो उसका खतना होने के कारण उसे यह समाज अपने से अलग मानेगा और वह हमेशा मुस्लिम ही माना जाएगा।
इस बात को आप एक मौलवी के RSS के बयान से समझ सकते है जिन्होंने कहा था कि हिन्दू लोग अगर एक मुर्तद को हिन्दू कर भी ले तो क्या उन्हें खतना वाला हिन्दू बर्दाश्त होगा?? [2]

---

[2] https://www.amarujala.com/news-archives/india-news-archives/conversion-what-would-accept-hindu-circumcision-hindi-news

अलकायदा, तालिबान, आईएस और हिजबुल मुजाहिदीन जैसे लोग भटके हुए हैं। सही मायनों में तो इन्हें राह दिखाने की जरूरत है। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत को चाहिए कि वह पहले इन सब को हिंदू बनाएं, उसके बाद देश के मुसलमानों के बारे में सोचें। यह कहना है शिया धर्मगुरु मौलाना कल्बे सादिक का। रविवार को वह अलीगढ़ एक निजी कार्यक्रम में भाग लेने आए हुए थे। उन्होंने धर्मांतरण और घर वापसी कार्यक्रम को महज चंद लोगों का एक राजनीतिक स्टंट बताया।

मौलाना कल्बे सादिक ने कहा कि वर्ष 2021 में देश के सभी मुसलमान और ईसाई हिंदू बन जाएंगे। धर्म जागरण समिति के बृज क्षेत्र के प्रमुख राजेश्वर सिंह के इस बयान पर मौलाना कल्बे सादिक का कहना है कि अगर ऐसा हो भी गया तो क्या खतना वाला हिंदू स्वीकार होगा। उन्होंने बताया कि खतना मुसलमानों की एक पहचान होती है, मजहब बदलने वाले इस पहचान को कैसे बदलेंगे।

इसके अलावा आप एक ex muslim के चैनल पर दिए गए बयान को भी सुन सकते है, जिसमे वह साफ साफ कह रहा है कि अगर कोई व्यक्ति इस्लाम छोड़ भी दे तो खतने की वजह से वह मुस्लिम ही रहेगा।
Deen e Murtad Exmuslim YouTube channel

इस से आप साफ समझ सकते है कि मौलवियों का मानना है खतना असल मे इस्लाम मजहब का ठप्पा है और यही इसी से आप आमिर खान के उस सवाल का जवाब भी पा जाएंगे जो कि वह PK मूवी में पूछते है कि धर्म का ठप्पा बच्चे के कहाँ होता है?? जबकि आमिर को पूछना चहिए था कि मजहब का ठप्पा किधर है???

भाग 4

खतने के फायदे या लीपापोती??

अब तक हमने खतना के इतिहास, इसके किताबी रेफरेन्स देखे।
अब हम एक एक करके उन दलीलो को देखेंगे जो कि अक्सर इसके फायदे का बखान करती है।

मिथक **1:** खतना कराने से सफाई में आसानी होती है।
सच**:** खतना के बारे में मैंने जिस भी बड़े बड़े scientific या मेडिकल लोगो के लेख रिपोर्ट पढ़े, उनमें बड़े बड़े अक्षरो में ताल ठोक कर यह दावा किया गया था कि खतना करवाने से शिश्न (penis) की सफाई में आसानी हो जाती है।
अगर हम देखे तो शिश्न का लगभग सारा हिस्सा ही आसानी से धुल कर साफ किया जा सकता है।
अगर एक युवक जिसने किसी भी प्रकार की काम क्रीड़ा (sexual activity) जैसे कि संभोग(sex) या हस्तमैथुन(Masturbation) शुरू न किया हो,उसके शिश्न की चमड़ी पूरी तरह से नीचे नही हो पाती है।
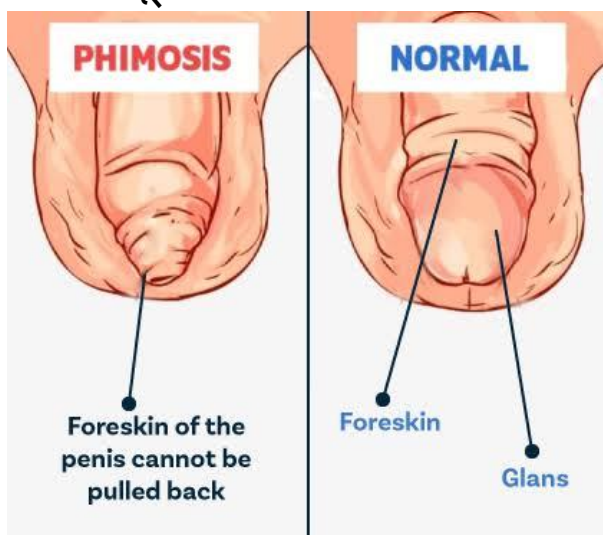
इसके कारण यह रहता है कि प्राकृतिक तौर से बच्चे के शिश्न की चमड़ी को थोड़ा समय लगता है। उसपर भी अगर एक युवक हस्तमैथुन करता होता है तब यह चमड़ी अपने आप नीचे आ जाती है और फिर शिश्न साफ करने में कोई दिक्कत नही रहती है।
यहाँ पर याद रखा जाए हम किसी को भी हस्तमैथुन के लिए प्रेरित नही कर रहे है, बल्कि इसका शिश्न के साथ जुड़े एक तथ्य को पेश कर रहे है की आमतौर पर गलत संगत की वजह से सभी युवा हस्तमैथुन जैसी फिजूल आदत में लत तो रहते ही है ऐसे में शिश्न की चमड़ी आराम से निचे आ जाती है और एक युवा उसे आसानी से साफ़ कर सकता है।

एक औसत युवा जिसकी उम्र १० साल से ऊपर हो जाती है, तो उसमे शिश्न का यह हिस्सा अपने आप ही खुल जाता है और अगर किसी में किसी दिक्कत होती है तो भी उसे डॉक्टरी सलाह लेकर काम करना चाहिए।

अब अगर हर बात को ध्यान पूर्वक देखे तो एक आम व्यक्ति जिसका खतना न हुआ हो तो वह आसानी से अपने शिश्न को साफ कर सकता है और उसे पूरी जीवन मे कभी भी खतना जैसे रिवाज को करवाने की कोई जरूरत महसूस नही होनी चाहिए। इसीलिए यह दावा की खतना करवाने से किसी भी प्रकार का सफाई में आसानी होती है, एक प्रकार का लाग लपेट है।
अगर अभी भी कोई इस बात को नही समझा है तो उसे इस तरीके से समझना चाहिए कि जैसे सर धोने के लिए मुंडन करवाने की जरूरत नही होती, वैसे ही खतना किये बिना भी अच्छे से साफ सफाई मुमकिन है।

मिथक **2:** खतना करवाने से गुप्त रोग नही होते है।
सच**:** इस मिथक को तोड़ने से पहले आप जानिए की यह गुप्त रोग क्या होता है??

गुप्त रोग वह खास प्रकार के रोग होते है जो कि हमेशा गुप्तांग (शिश्न और योनि) के आस पास प्रकट होते या दिखते है। इनसे अक्सर गुप्तांग प्रभावित होते है और संभोग या मूत्र मल इत्यादि समस्या आदि हो जाती है। गुप्त रोग अलग अलग प्रकार के होते है जैसे Syphilis, Herpes, Human papilloma virus infection, Gonorrhea, HIV/AIDS इत्यादि। ज्यादातर इसमे गुप्तांगों में सूजन, फोड़े पड़ना, मवाद निकलने और अन्य लक्षण आम होते है।
सभी गुप्त रोग फैलने का मुख्य कारण रोगग्रस्त व्यक्ति से सम्भोग होता है, कई बीमारियों जैसे HiV Aids में रोग ग्रस्त व्यक्ति से रक्त या वीर्य का सम्पर्क भी इसके होने का कारण माना जाता है।

अब हमने जान लिया है कि गुप्त रोग क्या होता है, तो यह समझना कोई मुश्किल काम नही है कि खतना जैसा रिवाज करवाने से गुप्त रोग रुकने का कोई लेन देन नही है। खतना रिवाज में शिश्न का आगे के हिस्से वाली चमड़ी कट जाती है लेकिन इससे शिश्न का बाकी हिस्सा तो वही रहता है और गुप्त रोग इन बाकी हिस्सों में भी आसानी से बल्कि कई बार वही होता है।

जैसे कि Herpes, HPV (human papiloma virus), Syphillis जैसे गुप्त रोग के लक्षण व्यक्ति के शिश्न (penis) के गोल हिस्से में दिखाई पड़ते है। HPV तो व्यक्ति के शिश्नमुंड और शिश्न के पिछले हिस्से तक मे बड़े बड़े मस्से के रूप में फैलते है। वही gonorrhea में तो व्यक्ति के शिश्न का अंदरूनी हिस्सा यानी कि मूत्र नली प्रभावित होती है, जिससे मूत्र छेद से एक चिपचिपा पदार्थ निकलता रहता है।

वही दूसरी और शिश्न (Penis) कैंसर नाम की बीमारी का भी हवाला दिया जाता है कि यह बीमारी भी खतना हुए लोगो मे कम दिखाई देती है, ऐसा कहकर पिछले कई साल पहले लोगों का खतना किया जाता था लेकिन American कैंसर सोसाइटी के एक लेख में खुद माना गया है कि यह एक भूल के अलावा और कुछ नही थी। पेनिस कैंसर का शिश्न के खतना से कोई भी लिंक बाद में वह जोड़ नही सके थे। उन्होंने यह स्वयं कहा कि अगर कोई व्यक्ति अपने शिश्न की अच्छी तरह से सफाई करे तो वह भी इस रोग से बचा रह सकता है।[3]
बाकी तो इस रोग में HPV के टीके लगवाना ही काफी इलाज है जिसके बाद खतना करवाना एक फिजूल कदम ही माना गया है।

---

[3] https://www.cancer.org/cancer/penile-cancer/causes-risks-prevention/prevention.html

कई विदेशी रिपोर्ट जैसे कि tobian रिपोर्ट ने माना है कि गुप्त रोग syphilis खतना किये और न खतना किये मर्दों में एक जैसा ही फैलता है। Tobian रिपोर्ट ने यह माना कि गुप्त रोगों की फैलने की दर खतना किये मरीजों में कम होती है, जिसका हवाला देकर कई मुस्लिम ताल ठोककर आपसे कहेंगे कि देखो खतना के फायदे, लेकिन यह फायदे सिर्फ कमी को बताते है।
Tobian रिपोर्ट भी यह मानती है खतरा हो जाने से कोई गुप्त रोग नहीं होगा, यह असंभव है।

इसके अलावा HIV AIDS की बारी में Tobian रिपोर्ट और WHO की रिपोर्ट दोनों कहती है कि खतना करने से आपको HIV होने से आसार कम हो जाता है। लेकिन हम कहेंगे कि WHO और Tobian रिपोर्ट दोनों खतना के फायदे गिनवाने के चक्कर मे आधी बातें बता रहे है।[4]

पहली बात तो आप इन सभी रिपोर्ट्स में यह देखेंगे की इन रिपोर्ट में इन बीमारियों का अवलोकन सिर्फ और सिर्फ खतना हुए लोगो और ज्यादातर अफ्रीकन मूल के लोगो पर हुआ है और इस आधार पर ही खतना ग्रस्त लोगों में इन बीमारियों के होने पर बात हो रही है। जबकि रिपोर्ट बनाने वाले लोगो को, खतना न हुए लोगो मे से भी sample और लोगो को छांटना चाहिए था ताकि वह इस आधार पर दोनो का मिलान एक समान करते लेकिन ऐसा किसी रिपोर्ट में नही हुआ है, जिससे सिर्फ खतना होने के फायदे ही दिखते है, बल्कि मामला यहां पर खतना न हुए लोगो का भी एक जैसा ही है।

दूसरी बात यह देखिए कि HIV के मामले में, विषाणु सिर्फ रक्त या वीर्य के जरिये फैलता है और सम्भोग के दौरान जब स्त्री गुप्तांग में कही चोट

[4] https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3684945/

खरोच लग जाती है तब वह विषाणु इस चोट/खरोच के जरिये शरीर मे दाखिल हो जाती है। WHO और Tobian report दोनों में यही लिखा है कि खतना करने से शिश्न की आजू बाजू की खाल कट जाती है जिससे खाल के न होने से कटने फटने के मौके कम हो जाते है।

लेकिन क्या खाल कट जाने से शिश्नमुंड पर से खरोच लगने या आस पास की खाल के खरोंच के मौके कैसे कम हो जाएगी??
और अगर AiDS, आपके स्त्री जोड़ीदार को हो तो??
और सबसे बड़ी बात तो यह है कि ये दोनों रिपोर्ट में वीर्य के जरिये इस रोग के फैलने की बात तक नही हुई है, जबकि वीर्य भी इस बीमारी के फैलने की वजह बन सकती है।
इस वजह से दोनों रिपोर्ट अपना बचाव यह कह कर लेती है कि ये रिपोर्ट आधारित टेस्ट पर है और लोग अपनी समझ से काम करे और यौन सम्बन्ध बनाते हुए कंडोम जैसे उत्पाद का सहारा लीजिये।

इस प्रकार आप समझ सकते है सभी रिपोर्ट ज्यादातर इसी और जोर देते है कि अगर आप शिश्न का खतना करवा भी लेते है तो आपको गुप्त रोग होने के आसार बने रहते है।
ऐसे में सिर्फ कंडोम का उपयोग ही आपको और आपके पार्टनर को एक सुरक्षा प्रदान करता है जिसमे आप गुप्त रोगों से बच सकते है।

यह सभी रिपोर्ट खतने की एक और मेडिकल दिक्कत को नही देखती है कि ज्यादातर खतना हॉस्पिटल में नही किये जाते है जिसकी फरमाइश और सुझाव अक्सर डॉक्टर देते है।
डॉक्टरों के अनुसार अगर आप एक कुशल डॉक्टर द्वारा सर्जरी के जरिये सावधानी पूर्वक खतना करते है तो आपको infection, खून बहना, और दर्द का एहसास कम होता है।

लेकिन अगर सही से देखे तो मुस्लिम भाई लोगो मे यह एक आपरेशन नही बल्कि एक मजहबी रिवाज होता है। इसीलिए खतना करने के लिए वह एक डॉक्टर नही बल्कि नजदीकी के किसी मुस्लिम नाई से सम्पर्क करते है।
यह मुस्लिम नाई बेशक खतना करने से expert होते है लेकिन अगर देखा जाए तो न तो यह किसी भी प्रकार की डॉक्टरी पढ़े होते है और न ही इन्हें नसों का कोई ज्ञान होता है।
यह नाई लोग किसी तेजधार से जैसे छुरी, चाकू या कैची से युवक या बच्चे का शिश्न का आगे का चमड़ा काटते है, और ऐसे करते समय दो तीन लोग उस बच्चे या बच्ची को पकड़े रहते है।
ऊपर से यह लोग किसी भी प्रकार का दर्दनिवारक दवाई (Anasthesia) तक इन बच्चो को नही लगाते है जिससे उनका दर्द कम हो जाये।
इससे उस बच्चे के शिश्न में सूजन, बहुत ज्यादा दर्द और यहाँ तक कि infection का भी डर होता है।

मिथक **3:** खतना करने से कामइच्छा या ठरक **(**हवस**)** कम हो जाती है
सच्चाई**:** कई बार मैंने बहुत से मुल्ला मौलवियों को यह कहते सुना है कि खतना करने से आदमी और औरत के अंदर काम इच्छाएं (जिन्सी ख्वाहिश) कम होती है, इसीलिए हर मुस्लिम को काम इच्छाएं दबाने के लिए खतना करना चहिए। वही कुछ मौलवी तो ये कहते है कि खतना करने से मर्दों में मर्दानगी वाली ताकत आ जाती है और वह अपनी औरतों को बिस्तर में ज्यादा सुख दे पाते है।

यह दावा तो इतना खोखला और बेकार है जिसकी पुष्टि खुद कई प्रकार के मेडिकल रिपोर्ट कर चुके है कि खतना करने से व्यक्ति के काम इच्छा पर

कोई भी फर्क नही पड़ता है। खतना करने से न तो कोई भी मर्दानगी ताकत हासिल होती है और न ही इससे सेक्स में अरुचि का आसार होता है।

National Library of medicine america की एक रिपोर्ट के अनुसार, करीब करीब 40473 आदमी इक्कठे किये गए जिनमे से 19542 खतना किये और 20931 खतना बगैर मर्द थे। इस रिपोर्ट ने माना कि दोनों ही तरह के मर्दों ने टेस्ट के दौरान माना कि उन्हें शिश्न के खड़े होने, उसके सहन करने की क्षमता, वीर्यस्खलन(ejaculation), कामसुख(orgasm) या अन्य किसी भी प्रकार के शिश्न से जुड़े अनुभव में कोई भी प्रकार की दिक्कत नही है।
इससे यही साबित होता है कि खतना करवाये हुए और न करवाये हुए लोगो मे काम इच्छा समान है और उसमें कोई भी फर्क नही आया है।

2013 की Asian journal of Andrology संस्था ने भी इसी प्रकार दोनों प्रकार के व्यक्तियों में किसी भी प्रकार का अंतर नही पाया गया, जो कि National Library of Medicine America की रिपोर्ट में देखा गया।

इस से साफ साफ जाहिर होता है कि खतना करवाने से यौन शक्ति में कमी या बढ़ौतरी का कोई भी लेन देन कम से कम विज्ञान की दृष्टि में तो नही है।

यह तो मेडिकल रिपोर्ट के हवाले से हमने कहा और बताया लेकिन अगर हम नैतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से देखे तो भी मुस्लिम उलेमाओं का ये दावा की खतना से हवस पर फर्क पड़ता है एकदम झूठी और गप्प लगती है क्यूंनकि इतिहास खुद साबित करता है कि मुस्लिमो में काम वासना हद पार ज्यादा है।

इतिहास में मुहम्मद बिन कासिम से लेकर मुग़ल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला आक्रांता और बर्बर मुस्लिम राजा हुए है उन सभी में काम वासना कूट कूट कर दिखती है। काफिरो की औरतें उठावाना और अपने हरम में रखना ही उनका मुख्य ध्येय होता था। इन हरमो में हजारों हजार औरतें वह रखते थे जिनसे वह शारीरिक संबंध बनाते थे। बहुत सी नारियों का तो बलात्कार करने का काम इनके लिए जैसे कोई खेल होता था।

अल्लाउदीन खिलजी जैसे सुल्तान तो पुरुष गुलामो तक से संबंध स्थापित करते थे तो मुस्लिम उलेमाओं के यह दावे कितने सच्चे है आप खुद ही तय कर सकते है।

मिथक **4:** खतना की सर्जरी से कोई नुकसान नही होता है।
सच्चाई: खतना अगर किसी सर्जन द्वारा हॉस्पिटल में करवाया जाए तो बहुत से मामलों में उसमें डर और खतरा कम हो जाते है क्यूंनकि एक सर्जन डॉक्टरी पढा हुआ और एक्सपीरियंस लिया हुआ होता है। डॉक्टर जब खतना करते है तो वह anasthesia का इस्तेमाल करते है और अच्छे सर्जिकल उपकरणों का इस्तेमाल करके इस सर्जरी को करते है। लेकिन मुस्लिम लोगो में खतना एक सर्जरी नहीं बल्कि एक मजहबी रिवाज है जिसकी वजह से वह कभी भी एक डॉक्टर के पास न जाकर एक खतना करने वाले नाई को पकड़ते है। किसी डॉक्टर के पास न जाने की वजह यह भी है की मुस्लिम सर्जरी करवाने का खर्चा भी बचवाना चाहते है।
खतना करने वाला नाई एक सर्जन से उल्ट किसी इस्तेमाल में आने वाली कैंची या हजामत करने वाले ब्लेड से ही खतना करते है और ऐसा करते हुए वह किसी दर्दनिवारक औषद्धि (anasthesia) का भी इस्तेमाल नहीं करते है, उलटे घर के ही दो तीन मजबूत लोग उस लड़के या लड़की की टांगो और हाथो को कसकर पकड़ लेते है।

इसमें होने वाला दर्द बहुत ही भयावह और पीड़ादायक होता है , जिसकी वजह से कई दिन तक शिश्न या योनि में दर्द रहता है, उसमे से खून निकलता है और मूत्र वगैरा करने में दिक्कत होती है।
कुछ बदनसीबों के लिए तो यह दर्द सारि जिंदगी के लिए नासूर बन जाता है क्यूंकि उनके गुप्तांग के जख्म भरते भी नहीं है। लड़कियों के खतना में तो मानसिक और शारीरिक दर्द का पार ही नहीं रहता क्यूंकि खतना होने के बाद भी जख्म बहुत धीमे भरते है और जब यह लड़किया सम्भोग करती है तो दर्द फिर से होता है।

तो किसी का भी यह कहना की खतना करने से कोई भी नुकसान नहीं होते यह एक आधी अधूरी बात है।

भाग 5

महिला खतना (Female Genital Mutilation)

हमने पिछले भाग में FGM यानी महिला खतना पर थोड़ी बात की थी, इस भाग में हम पूरी तरह से इस पर चर्चा करेंगे।

महिला खतना या खतज भी पुरुष अंग की तरह ही महिला संभोग अंग योनि में काट छंट की प्रक्रिया है, लेकिन पुरुष की तरह यह सरल नही बल्कि कष्टदायक और दुखदायक है।

कुछ मुस्लिम फिरके जैसे भारत मे बोहरा समाज और बहुत से अफ्रीकी कबीले में औरतों के भी खतना का रिवाज है, जिसे अंग्रेजी में Female Genital mutilation कहते है। FGM का जिक्र सिर्फ इस्लामी मजहब में मिलता है बाकी मजहब में इसका कोई जिक्र नही, न ही वह इसका पालन कर रहे है। इस समय यह रिवाज अफ्रीकी मूल के उन इलाकों में किया जाता है जहां पर इस्लामी राज्य है।

इस रिवाज में महिलाओं के प्रजनन अंग जिसे संस्कृत में भग, योनि और अंग्रेजी में vagina कहते है उसके भागो में काट छंट करके वहां से मांस के टुकड़े हटा लिए जाते है। इसे इस्लाम मजहब में हराम की बोटी काटना कहा जाता है।

इस प्रकार की शल्य क्रिया के 3 प्रकार होते है जिन्हें विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 2008 की लिस्ट में क्रमबद्ध किया है:-

1. प्रकार 1- इस प्रकार में शल्य क्रिया के जरिये भगनासा (Clitoris) के हिस्से को काटकर अलग कर दिया जाता है। clitoris एक दाने जैसे अंग होता है जो vagina के ऊपरी भाग में होता है और महिलाओं में काम अग्नि को बढ़ाता है।
2. प्रकार 2- इस प्रकार में भगनासा(Clitoris) और Labia Minor को काट कर अलग कर दिया जाता है।
3. प्रकार 3- इस मे भगनासा, labia minor को काट कर अलग कर देते है और Labia major के हिस्सों को सुई धागे की मदद से सिल देते

है, या किसी और तरीके (पेड़ पौधों के कांटो) से बंद कर देते है सिर्फ एक छोटे से छेद को छोड़ कर जिसके कारण युवती मूत्र कर सके या बाद में प्रजनन कर सके। इस दौर में लड़की की टांगो को भी बांधा जाता है ताकि उसके टांके आराम से भर सके।

WHO की एक रिपोर्ट के अनुसार अफ्रीका और एशिया के करीब 30 देशों में से करीब करीब 20 करोड़ लड़कियों का खतना हो चुका है।

इस प्रकार के शल्य क्रिया के लिए कोई प्रोफेशनल सर्जन नही बुलाया जाता है बल्कि किसी नाई या खतना करने वाली महिला की सहायता ली जाती है। कई बार तो यह खतना करने वाले एक पुरुष नाई ही होता है जिससे एक युवती के आत्मसम्मान को कितना ठेस लगता है इसकी कल्पना नही की जा सकती है।

एक अफ्रीकी नर्स के हिसाब से तो कई कई बार तो इस में कई लड़कियों का एक ही चाकू से खतना कर देते है जिससे Hiv/Aids, Hepatitis C और B जैसी बीमारियों के होने के आसार तक बढ़ जाते है।

सभी प्रकार की मेडिकल रिपोर्ट की इस बात से पुष्टि करती है कि महिला खतना किसी भी प्रकार से उस युवती के लिए सही नही होता है, इससे युवती में मानसिक और शारीरिक कष्ट के सिवाय और कुछ प्राप्त नही होता है।

महिला खतना के करने से शुरुआती नुकसान सूजन, दर्द, खून और मवाद, फोड़े फुंसी हो जाना, नासूर, मूत्र में कठिनाई इत्यादि रहते है। इसके बाद में नुकसान बड़े बड़े मस्से, दर्दनाक माहवारी, दाग, संभोग और बच्चा पैदा करने में दर्द कठिनाई, भगंदर इत्यादि होते है।

WHO की 2006 की एक रिपोर्ट के अनुसार 1000 लड़कियों में से 20-30 का गर्भ गिरने की वजह लड़की का खतना ही था।

7 देशों की 12671 लड़कियों पर की गई 2013 की रिपोर्ट का कहना है कि जिन लडकियो का खतना हो रखा था, उनमें काम इच्छा में अरुचि हो जाती है, क्यूंनकि इसमे दर्द और पीड़ा का अनुभव होता है।

आप इस चार्ट में उन देशों को देख सकते है जहाँ पर महिला खतना के खिलाफ कानून है और जहां पर नही है। आप देख सकते है कि सिर्फ मुस्लिम देश ही ऐसे है जहाँ पर महिला खतना को कानूनी तौर पर रोकने की कोई भी कवायद या कोशिश नही की गई।
हाल ही में भारत के बाहर समाज की मासूमा रानालवी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को खत लिखकर इस कुप्रथा को रोकवाने में सहायता की मांग की है। 2017 से लेकर अभी तक सुप्रीम कोर्ट में यह केस चल रहा है जिसमे बोहरा मुस्लिम समुदाय के रिवाज के खिलाफ केस चल रहा है। आप लोग इधर अशराफ मुस्लिमो द्वारा दबाव को अच्छे से समझ सकते है कि कैसे एक ऐसा काम जिसकी वजह से खुद उनके समाज की औरतों के जीवन को कष्ट पहुंचता है उन्हें उसी काम को रुकवाने में कोई रुचि नही है।

उपसंहार

आखिर में हम ने खतना रिवाज के उद्गम और इसके अभी के हालत पर गौर कर लिया है। साथ ही साथ हमने खतना रिवाज के साथ जुड़े लीपापोती और झूठे प्रचारो पर भी गौर किया है, जिनके ऊपर हमने पूरी तरह से देखकर इन सभी के ऊपर वैज्ञानिक तौर से टिप्पणी की है।
अंत में हम सभी लोगो से आग्रह करेंगे की अगर आप एक गैर मुस्लिम है तो कभी भी आप खतना जैसे किसी भी रिवाज को न करे और न ही इसको ठीक समझे। इसके बजाए आप अपने गुप्तांगो की साफ़ सफाई का ध्यान दीजिये, नियमित तौर से किसी सौम्य साबुन या शैम्पू से इसकी सफाई करे। ध्यान दें की साबुन या शैम्पू तीखे और तेज केमिकल से न बना हुआ हो ताकि आपको कोई और दिक्कत न पेश आये।
इसके अलावा हम आपको एक सनातनी होने के नाते आग्रह करेंगे की आप किसी भी तरह की अनैतिक यौन सम्बन्ध न स्थापित करे। अनैतिक यौन सम्बन्ध से समाज में कटुता और आरजकता तो होती ही है, इसके अलावा इससे गुप्त रोगों के फैलने का भी कारण बनते है। लेकिन अगर आप फिर भी यह अधर्म करना ही चाहे(इसकी सजा बाद में मिल जाएगी) तो कम से कम कंडोम का इस्तेमाल जरूर करे ताकि आप गुप्त रोगो से बचे रहे।
इसके अलावा किसी भी प्रकार की इस्लामी चिकनी चुपड़ी बातो में आने से पहले अपने विवेक का पूरा इस्तेमाल कीजिये।

अगर आप एक मोमिन है और पूरी किताब पढ़ कर भी आप इस किताब से वास्ता नहीं रखते है(जो की हम जानते है) तो भी हम आपसे यही कहेंगे की आप कम से कम दो काम तो कर ही सकते है।
पहला की महिला खतना को अलविदा कहकर अपने समाज की लड़कियों को कई बिमारिओ और दर्द से बचाइए।
दूसरा खतना करने के लिए आप किसी डॉक्टर या सर्जन की सहायता प्राप्त कीजिये।